अध्याय 15

प्रतिज्ञा के देश में जीवित रहने का वचन

लोगों के अविश्वास करने के तुरन्त बाद, गिनती में एक अध्याय शामिल किया गया जो कनान में प्रवेश करने के बाद इस्राएलियों को बलिदानों के बारे में बताता है। उन्हें पशु बलिदान के साथ अनाज, तेल और दाखमधु से सम्बन्धित निर्देश दिए गए। इसके अलावा, अपने पहले गुँधे हुए "आटे की एक पपड़ी उठाई हुई भेंट" चढ़ाने के निर्देश दिए गए थे (15:20)। इसके बाद, आयतों की एक पंक्ति है जो "भूल से किया हुआ" (15:24) पाप करने और "अनादर करनेवाला" (15:30) पाप करने के बीच अन्तर बताता है। इस बिंदु पर, सब्त के नियम का उल्लंघन के बारे में एक कथन शामिल है, स्पष्ट रूप से यह स्पष्ट करने के लिये कि नियम का उल्लंघन जैसे पापों के दोषी लोगों के साथ क्या किया जाना है। अन्त में, परमेश्वर को यह आवश्यक था कि अपनी आज्ञाओं को उन्हें स्मरण दिलाने के लिये वे अपने वस्त्रों के छोर पर झालर लगाएँ (15:37-41)।

इस अध्याय की व्याख्या करने में, किसी को प्रश्न उठाना चाहिए कि यह संदर्भ से कैसे सम्बन्धित है। अध्याय 15 में पहले या उसके बाद जो आता है उसके साथ कोई स्पष्ट सम्बन्ध नहीं है। दृष्टिकोण कभी-कभी इस अध्याय और उसके आगे पीछे के अध्यायों के बीच किसी भी सम्बन्ध के होने को न मानने के लिये किया गया है।

उस दृष्टिकोण के विपरीत, हमें अध्याय में दिए गए निहित वचनों पर विचार करना चाहिए: (1) इस्राएली उस देश में प्रवेश करेंगे जिसकी प्रतिज्ञा उनसे की गई थी (15:2, 18)। (2) वे जानवरों, अन्न, दाखमधु और तेल की भेंट चढ़ाने देने के लिये पर्याप्त समृद्ध होंगे। (3) वे "उस देश की उपज" खाएँगे (15:19)। (4) वे एक ऐसा जीवन यापन करने पाएँगे जिसमें वे अपने पहले गूँधे हुए आटे की भेंट चढ़ा सकते थे (15:20)।

अध्याय 13 और 14 के बाद घोर पाप के विनाशकारी परिणाम के बाद, हमारे वर्तमान पाठ में आश्वासन दिया गया है कि - इस्राएल पाप करने के बावजूद - राष्ट्र प्रतिज्ञा के देश में प्रवेश करेगा और वहाँ समृद्ध होगा। इस्राएल का पापमय स्वभाव परमेश्वर को अपना दिया वचन पूरा करने से रोक नहीं पाएगा। उन लोगों के लिये कितना अद्भुत आश्वासन होना चाहिए जिन्होंने पहली बार व्यवस्था को प्राप्त किया था! भले ही एक पीढ़ी जंगल में मरने के साथ नष्ट हो गई, फिर भी राष्ट्र बना

रहेगा और प्रतिज्ञा के देश आशीषों का आनन्द उठाएगा।

गिनती 15 इस्राएल के याजकपद पर ध्यान केन्द्रित करने वाले पाँच-अध्याय खंड से शुरू होता है। अध्यायों के विषयों को निम्नानुसार वर्णित किया जा सकता है:

अध्याय 15	याजकों द्वारा विशेष भेंट चढ़ाना (विशेष रूप से कनान में इस्राएल के आगमन के बाद)।
अध्याय 16; 17	हारूनी याजकों को परमेश्वर द्वारा दिया गया अधिकार।
अध्याय 18	याजकों और उनके सहायकों, लेवियों के विशेषाधिकार और जिम्मेदारियाँ।
अध्याय 19	याजकों का लोगों को अशुद्धता से शुद्ध करने का कार्य।

इस दृष्टिकोण से देखा गया है, पूरा खंड दो बिंदुओं के पाठ के रूप में लिया जा सकता है: (1) परमेश्वर के पापमय राष्ट्र के लिये एकमात्र आशा उसे बदलने में लगी है, और (2) पवित्र किए गए याजकीय पद परमेश्वर द्वारा नियुक्त साधन था जिससे लोग क्षमा के लिये उससे संपर्क कर सकते हैं।

"यहोवा के लिये हव्य" चढ़ाना (15:1-16)

[1]फिर यहोवा ने मूसा से कहा, [2]"इस्राएलियों से कह कि जब तुम अपने निवास के देश में पहुँचो, जो मैं तुम्हें देता हूँ, [3]और यहोवा के लिये क्या होमबलि, क्या मेलबलि, कोई हव्य चढ़ाओ, चाहे वह विशेष मन्नत पूरी करने का हो चाहे स्वेच्छाबलि का हो, चाहे तुम्हारे नियत समयों में का हो, या वह चाहे गाय-बैल चाहे भेड़-बकरियों में का हो, जिससे यहोवा के लिये सुखदायक सुगन्ध हो; [4]तब उस होमबलि या मेलबलि के संग भेड़ के बच्चे पीछे यहोवा के लिये चौथाई हीन तेल से सना हुआ एपा का दसवाँ अंश मैदा अन्नबलि करके चढ़ाना, [5]और चौथाई हीन दाखमधु अर्घ करके देना। [6]और मेढ़े पीछे तिहाई हीन तेल से सना हुआ एपा का दो दसवाँ अंश मैदा अन्नबलि करके चढ़ाना, [7]और उसका अर्घ यहोवा को सुखदायक सुगन्ध देनेवाला तिहाई हीन दाखमधु देना। [8]और जब तू यहोवा को होमबलि या किसी विशेष मन्नत पूरी करने के लिये बलि या मेलबलि करके बछड़ा चढ़ाए, [9]तब बछड़े का चढ़ानेवाला उसके संग आधा हीन तेल से सना हुआ एपा का तीन दसवाँ अंश मैदा अन्नबलि करके चढ़ाए। [10]और उसका अर्घ आधा हीन दाखमधु चढ़ाए, वह यहोवा को सुखदायक सुगन्ध देनेवाला हव्य होगा। [11]एक एक बछड़े, या मेढ़े, या भेड़ के बच्चे, या बकरी के बच्चे के साथ इसी रीति चढ़ावा चढ़ाया जाए। [12]तुम्हारे बलिपशुओं की जितनी गिनती हो, उसी गिनती के अनुसार एक एक के साथ ऐसा ही किया करना। [13]जितने देशी हों वे यहोवा को सुखदायक सुगन्ध देनेवाला हव्य चढ़ाते समय ये काम इसी रीति से किया करें। [14]और यदि कोई परदेशी तुम्हारे संग रहता हो, या तुम्हारी किसी पीढ़ी में तुम्हारे बीच कोई

रहनेवाला हो, और वह यहोवा को सुखदायक सुगन्ध देनेवाला हव्य चढ़ाना चाहे, तो जिस प्रकार तुम करोगे उसी प्रकार वह भी करे। [15]मण्डली के लिये, अर्थात् तुम्हारे और तुम्हारे संग रहनेवाले परदेशी दोनों के लिये एक ही विधि हो; तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में यह सदा की विधि ठहरे कि जैसे तुम हो वैसे ही परदेशी भी यहोवा के लिये ठहरता है। [16]तुम्हारे और तुम्हारे संग रहनेवाले परदेशियों के लिये एक ही व्यवस्था और एक ही नियम है।"

आयतें 1-3. फिर **यहोवा ने मूसा से कहा**, और उन निर्देशों को दिया जिन्हें **इस्राएलियों** के प्रतिज्ञा के देश में प्रवेश करने के बाद मनाया जाना था:[1] **"इस्राएलियों से कह कि जब तुम अपने निवास के देश में पहुँचो, जो मैं तुम्हें देता हूँ, और यहोवा के लिये हव्य चढ़ाओ।"** इन निर्देशों से सम्बन्धित भेंट "यहोवा के लिये हव्य" चढ़ाया जाना चाहिए (देखें *परिशिष्ट: बलियाँ,* पृष्ठ 141)। इसलिये इस्राएल को आश्वासन दिया गया कि, उनकी चालीस वर्ष की देरी के बावजूद, राष्ट्र कनान में प्रवेश करेगा। इन बलिदानों का उल्लेख किया गया था:

1. **होमबलि**, जिसमें पूरा जानवर आग से भस्म हो जाता था।
2. दो प्रकार की मेलबलि, पहली **स्वेच्छाबलि** और दूसरी **विशेष मन्नत पूरी करने का** बलिदान (एक मन्नतबलि), जिसमें जानवर के कुछ भाग को वेदी पर जलाया जाता था और उस भाग को याजकों और भेंट चढ़ाने वालों द्वारा खाया जाता था।[2]
3. **नियत समयों में का** या इस्राएल के पर्वों के सम्बन्ध में दिए गए बलिदान।

आयतें 4-10. निर्देशों को **अन्नबलि करके चढ़ाना ... तेल से सना हुआ** और **दाखमधु अर्घ करके देना**, हर पशु **बलि** के साथ चढ़ाए जाने की आवश्यकता थी। "अन्नबलि" होमबलि के रूप में वेदी पर उसके साथ लाए गए जानवर के साथ चढ़ाया गया था। यह अज्ञात है कि होमबलि में जानवरों को "अर्घ करके देना" था या वेदी के पैर पर डाला गया था। जेकब मिलग्रोम ने सोचा था कि वेदी पर चढ़ाए गए जानवरों के मांस के लिये अन्न और दाखमधु के अलावा एक पूर्ण भोजन के बराबर बनाया गया था।[3] जानवर जितना बड़ा होगा, अन्न और दाखमधु की भेंट उतनी ही बड़ी हुआ करती होगी। 15:4-10 में, **भेड़ के बच्चे, मेढ़ा**, और **बछड़ा** के लिये विनिर्देश दिए गए थे:

ामना	$\frac{1}{10}$ एपा आटा	$\frac{1}{4}$ हीन तेल	$\frac{1}{4}$ हीन दाखमधु
ाढ़ा	$\frac{2}{10}$ एपा आटा	$\frac{1}{3}$ हीन तेल	$\frac{1}{3}$ हीन दाखमधु
ाछड़ा	$\frac{3}{10}$ एपा आटा	$\frac{1}{2}$ हीन तेल	$\frac{1}{2}$ हीन दाखमधु

शब्द **एपा** मूल इब्रानी पाठ में नहीं पाया जाता है, परन्तु संदर्भ से समझा जाता है। यह "1.5 से 2.5 पेक्स [दो गैलन की तौल], या तीन-आठवाँ अंश से एक बुशेल [बत्तीस सेर का तौल] के दो-तिहाई तक था।"[4] मिस्र के तरल माप के रूप में

हीन लगभग आधा क्वार्ट (एक सेर के लगभग नाप/ चौथाई गैलन) था। इस्राएली हीन एक गैलन से थोड़ा कम था।[5] एक अन्य संस्करण के कुछ प्रतियों में एक फुटनोट इसे लगभग एक गैलन के रूप में परिभाषित करता है। इसलिये, ¼ हीन एक क्वार्ट के बराबर होगा।

अनुच्छेद सारांश विवरण के साथ निष्कर्ष निकालता है, यह बताते हुए कि इस्राएलियों को इन आवश्यकताओं का पालन करना होगा। यदि उन्होंने किया, तो उनकी चढ़ाई गई भेंटे **यहोवा को सुखदायक सुगन्ध** (देखें 15:13, 14, 24) प्रदान करेगा - उनके अर्थात् उनकी भेंटों से परमेश्वर प्रसन्न होगा।

आयतें 11-13. इन नियमों के बारे में दो अन्य तथ्यों पर जोर दिया जाता है। उन्हें हर पशु बलिदान के लिये आज्ञा का पालन करना था, जिनमें वे स्वेच्छाबलि के और आवश्यकता के अनुसार होते थे शामिल किया गया था: **एक एक बछड़े, या मेढ़े**, और **भेड़ के बच्चे, या बकरी के बच्चे**। यह आयत 12 का पसंदीदा व्याख्या प्रतीत होता है: **"तुम्हारे बलिपशुओं की जितनी गिनती हो, उसी गिनती के अनुसार एक एक के साथ ऐसा ही किया करना।"** व्यवस्था को एक निश्चित बलिदान की आवश्यकता थी, परन्तु भेंट का चढ़ानेवाला अन्य भेंट लाने के लिये स्वतन्त्र था तब जब वह परमेश्वर का विशेष रूप से आभारी होता था। आयत यह सिखाती है कि कोई जो भी बलि चढ़ाता था, वह सब जो वह तैयार करता था - उसे दिए गए निर्देशों का पालन करना होता था। हर इस्राएली (**जितने देशी हों वे**) को उनका पालन करना था। जैसा कि 15:2 में, आयत 13 के शब्दों ने उस समय की आशा की थी, जब इस्राएली प्रतिज्ञा के देश में रहने लगेंगे और उस देश में "देशी" कहलाएँगे।

आयतें 14-16. उन लोगों के बारे में क्या हुआ जो "देशी" नहीं थे? परमेश्वर ने कहा, **"यदि कोई परदेशी तुम्हारे संग रहता हो, ... और वह यहोवा को सुखदायक सुगन्ध देनेवाला हव्य चढ़ाना चाहे, तो जिस प्रकार तुम करोगे उसी प्रकार वह भी करे।"** "परदेशी" (גֵּר, *गेर)* जिन्होंने इस्राएल के साथ यात्रा की और "सुगन्ध देनेवाला हव्य चढ़ाया," उन्हें इस्राएली के समान नियमों का पालन करने के लिये बाध्य किया गया था, क्योंकि व्यवस्था इस्राएलियों और अन्य लोगों के लिये समान रूप से लागू होती थी जो उनके संग रहनेवाले परदेशी थे; दोनों समूहों पर **एक ही नियम** लागू होता था। ये परदेशी, गैर-यहूदी जो सम्भावित रूप से यहूदी विश्वास में परिवर्तित हुए थे, को दूसरे श्रेणी के नागरिकों के रूप में गिना जाना नहीं था। उनके पास इस्राएलियों के समान अधिकार और जिम्मेदारियाँ थीं। यहोवा ने कहा, **"तुम्हारे और तुम्हारे संग रहनेवाले परदेशियों के लिये एक ही व्यवस्था और एक ही नियम है।"**

"परदेशी" फसह में भाग नहीं ले सकते थे जब तक उनका खतना नहीं हो जाता था, अर्थात्, वे यहूदी विश्वास (निर्गमन 12:48) में परिवर्तित हो गए थे। जबकि सामान्यतः यह माना जाता है कि एक ही नियम सभी बलिदानों के लिये लागू होता था, यह सम्भव है कि जिन लोगों का अभी तक खतना नहीं हुआ था, उनका परिवर्तन अधूरा था, उन्हें गिनती 15 में बताए गए बलिदानों को चढ़ाने की

अनुमति दी जा सकती थी, फसह पर चढ़ाए जाने वाले बलिदानों को छोड़कर।

"अपने पहले गूँधे हुए आटे की" भेंट चढ़ाना (15:17-21)

17फिर यहोवा ने मूसा से कहा, 18"इस्राएलियों को मेरा यह वचन सुना, कि जब तुम उस देश में पहुँचो जहाँ मैं तुम को लिये जाता हूँ, 19और उस देश की उपज का अन्न खाओ, तब यहोवा के लिये उठाई हुई भेंट चढ़ाया करो। 20अपने एक पपड़ी उठाई हुई करके यहोवा के लिये; जैसे तुम खलिहान में से उठाई हुई भेंट चढ़ाओगे वैसे ही उसको भी उठाया करना। 21अपनी पीढ़ी पीढ़ी में पहले गूँधे हुए आटे में से यहोवा को उठाई हुई भेंट दिया करना।"

आयतें 17-21. परमेश्वर ने पहले से ही लोगों के लिये विशिष्ट आज्ञा दी हुई थी जब वे **देश में पहुँचे** थे और **देश की उपज का अन्न** खाया करते थे -दू सरे शब्दों में, जब वे कनान में बस गए थे। भेंट चढ़ाने के लिये ये निर्देश लोगों को तंबू के बदले घरों में रहने और फसलों की कटाई करने के लिये मानते थे। जब मामला ऐसा था, तो वे **यहोवा के लिये उठाई हुई भेंट** चढ़ाना चाहते थे (15:19)। **"तुम खलिहान में से उठाई हुई भेंट चढ़ाओगे।"** आयत 20 के अनुसार, यह भेंट **पहले गूँधे हुए आटा**, या "गूँधे हुए आटे की पहली बारी" था। शब्द "पहले" (רֵאשִׁית, *रेशिथ)* कुछ ऐसा वर्णन करता है जिसमें समय ("शुरुआत") या प्रमुखता ("मुख्य") में प्राथमिकता है। इसका उपयोग अन्न, दाखमधु , तेल और ऊन के सबसे पुराने भाग का वर्णन करने के लिये किया जाता है, जो परमेश्वर को समर्पित किया जाता था (व्यव. 18:4)।[6] "आटा" (עֲרִיסָה, *अरिसाह)* के अनुवाद के बारे में कुछ अनिश्चितता है। एक अन्य संस्करण में फुटनोट वैकल्पिक प्रतिपादन "मोटा पकवान" और "मुख्य भोजन" देता है। "पहले गूँधे हुए आटे" जो एक केक होता था जिसे उनकी **अपनी पीढ़ी पीढ़ी में** से **यहोवा को उठाई हुई भेंट दिया जाता** था (15:21)।

आयत 20 कहती है, "अपने पहले गूँधे हुए आटे की एक पपड़ी उठाई हुई भेंट करके यहोवा के लिये चढ़ाना; जैसे तुम खलिहान में से उठाई हुई भेंट चढ़ाओगे वैसे ही उसको उठाया भी करना।" विचार यह था कि जब इस्राएल एक व्यवस्थित जीवन के फल का आनन्द लेना शुरू कर और कटी हुई फसल के अन्न से रोटी बनाना शुरू कर चुका हो, तो हर बार जब वे रोटी पकाते थे तो उन्हें "आटे की पपड़ी" या "रोटी" को यहोवा को देने के लिये अलग करना होता था। जब तक वे उस देश में रहें तब तक उन्हें ऐसे ही दान करते रहना था। यह जानना कठिन है कि इस आज्ञा का पालन कैसे किया जाता था; परन्तु क्योंकि "आटे की पपड़ी" को "परमेश्वर के लिये" दिया जाना था, इसलिये कोई यह विचार कर सकता है कि इसे याजकों और/या लेवियों को तम्बू में प्रस्तुत किया जाता रहा होगा।

यह आज्ञा पहले दी गई आवश्यकताओं को बढ़ाता है। पहले, लोगों को बताया गया था कि देश में उत्पादित "कच्चा माल" - फसलों और जानवरों का एक भाग - परमेश्वर को दिया जाना चाहिए। यह व्यवस्था इंगित करती है कि "पहली उपज

की भेंट" "न केवल भूमि की पहली पकी फसलों से बल्कि पहली बार तैयार किए गए पदार्थों से भी थी ... जैसे कि पहली उपज का अन्न, उत्तम से उत्तम ताजा (जैतून) तेल, और उत्तम से उत्तम नया दाखमधु, फलों का रस, खमीरी भोजन और गेहूँ का आटा जैसा कि यहाँ चर्चा की गई है (गिनती 18:12)।"[7] देश की उपज का केवल एक भाग नहीं, परन्तु रसोई की सामग्री (और, इसी प्रकार से, कार्यक्षेत्र के उपज) का एक हिस्सा भी परमेश्वर को दिया जाना था। "कच्चे माल" की पहली उपज के अलावा, "तैयार उत्पादों" की पहली उपज भी उसी की थी।

अपनी भूल के लिये चढ़ावा (15:22-29)

22"फिर जब तुम इन सब आज्ञाओं में से जिन्हें यहोवा ने मूसा को दिया है
किसी का उल्लंघन भूल से करो, 23अर्थात् जिस दिन से यहोवा आज्ञा देने लगा,
और आगे की तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में उस दिन से उसने जितनी आज्ञाएँ मूसा के
द्वारा दी हैं, 24उसमें यदि भूल से किया हुआ पाप मण्डली के बिना जाने हुआ हो,
तो सारी मण्डली यहोवा को सुखदायक सुगन्ध देने वाला होमबलि करके एक
बछड़ा, और उसके संग नियम के अनुसार उसका अन्नबलि और अर्घ चढ़ाए, और
पापबलि करके एक बकरा चढ़ाए। 25तब याजक इस्राएलियों की सारी मण्डली के
लिये प्रायश्चित्त करे, और उनकी क्षमा की जाएगी; क्योंकि उनका पाप भूल से
हुआ, और उन्होंने अपनी भूल के लिये अपना चढ़ावा, अर्थात् यहोवा के लिये हव्य
और अपना पापबलि उसके सामने चढ़ाया। 26इसलिये इस्राएलियों को सारी
मण्डली का, और उसके बीच रहनेवाले परदेशी का भी, वह पाप क्षमा किया
जाएगा, क्योंकि वह सब लोगों के अनजाने में हुआ। 27फिर यदि कोई प्राणी भूल
से पाप करे, तो वह एक वर्ष की एक बकरी पापबलि करके चढ़ाए। 28और याजक
भूल से पाप करनेवाले प्राणी के लिये यहोवा के सामने प्रायश्चित्त करे; अतः इस
प्रायश्चित्त के कारण उसका वह पाप क्षमा किया जाएगा। 29जो कोई भूल से कुछ
करे, चाहे वह इस्राएलियों में देशी हो, चाहे तुम्हारे बीच परदेशी होकर रहता हो,
सब के लिये तुम्हारी एक ही व्यवस्था हो।"

पाप के विषय की ओर मुड़ते हुए, निर्देश "भूल से मण्डली के बिना जाने" किए हुए पापों पर केन्द्रित है। परमेश्वर ने न केवल पूरी मण्डली द्वारा भूल से किए गए पापों के लिये भेंट के निर्देश दिए (15:22-26), परन्तु व्यक्तिगत रूप से किए गए लोगों के लिये भी (15:27-29) दिए थे।

आयतें 22-24. पहले वर्णन में, इन पापों में **मूसा** के माध्यम से **यहोवा** द्वारा दी गई **सब आज्ञाओं** का पालन करने में बड़े पैमाने पर समुदाय की भूमिका विफलता में शामिल थी। जिन पापों को यहाँ सम्बोधित किया गया है वे **भूल से**, या **अनजाने में पाप मण्डली के बिना जाने** किए हुए पाप थे। जब इन पापों की पहचान हुई तो सारी मण्डली को **होमबलि करके एक बछड़ा, और** उसके **संग नियम के अनुसार उसका अन्नबलि और अर्घ चढ़ाए**, और उसके संग **पापबलि करके**

एक बकरा चढ़ाए।

"भूल से" या "अनजाने में" किए गए पाप का क्या अर्थ है? अन्य संस्करणों में इसके अनुवाद में "अज्ञानता में," "अनभिज्ञ होते हुए" या "अनभिज्ञता में" का उपयोग करते हैं। आयत 24 का अनुवाद इस प्रकार किया गया है, "यदि तुम सब बिना किसी अर्थ के मेरे किसी नियम का उल्लंघन करते हो ...।" सम्भवतः, "अनजाने में किया गया पाप का विचार पाप को" कमजोरी के क्षण में शामिल करने के लिये विस्तारित किया जाना चाहिए, क्योंकि लैव्यव्यवस्था में छल, चोरी और झूठ बोलना उन पापों में गिना जा सकता है जिसमें पश्चाताप और क्षमा किया जा सकता है (देखें लैव्य. 6:1-7)। इस तरह का पाप अज्ञानता या जल्दबाजी में, पहले से विचारे बिना किया जाता है। एक अनजाने पाप और जानबूझकर पाप के बीच के अन्तर को हत्या करने के नियमों के द्वारा चित्रित किया गया है (निर्गमन 21:12-14)। जिसने किसी व्यक्ति की हत्या की हो वह मृत्युदण्ड के अधीन होता था (निर्गमन 21:12); परन्तु यदि उसने हत्या करने की योजना नहीं बनाई थी, तो वह सुरक्षित स्थान में भाग सकता था और मृत्युदण्ड से बच जाता था (निर्गमन 21:13)। परन्तु, यदि, उसने "परन्तु यदि कोई ढिठाई से किसी पर चढ़ाई करके उसे छल से घात करे," तो उसको शीघ्रता से मार डाला जाना था (निर्गमन 21:14; देखें गिनती 35:16-34)।

एक "अनजाने पाप" और "जानबूझकर पाप" के बीच के अन्तर का एक और सम्भावित उदाहरण लैव्यव्यवस्था 10 में पाया जाता है। लैव्यव्यवस्था 10:1-3 में, नादाब और अबीहू यहोवा के द्वारा मारे गए थे, छुटकारे के लिये पश्चाताप या बलिदान करने का कोई अवसर नहीं था क्योंकि उन्होंने "उस ऊपरी आग को जिसकी आज्ञा नहीं थी यहोवा के सम्मुख" अर्पित किया। लैव्यव्यवस्था 10:16 में, फिर मूसा ने पापबलि के बकरे की खोज-बीन की, तो क्या पाया कि उसे पवित्र स्थान में खाने के बजाए जलाया गया है, जैसा कि किया जाना चाहिए था। इस अपराध के दोषी याजकों (एलीआज़ार और ईतामार) की हत्या नहीं हुई थी (लैव्य. 10:16-20)। क्यों नहीं हुई? शायद, उनका एक अनजाने में किया गया पाप था - एक गलती या एक त्रुटि - और नादाब और अबीहू के समान भयानक पाप नहीं था।

आयतें 25, 26. तब याजक इस्राएलियों की सारी मण्डली के लिये प्रायश्चित्त करता था, ताकि उन्हें **क्षमा** किया जा सके। क्षमा सम्भव थी क्योंकि वे अनजाने **पाप** के दोषी थे - विरोध में नहीं था - और निर्धारित बलिदान लाए गए थे। इस्राएलियों के बीच रहनेवाले **परदेशी** को भी एक ही समय में क्षमा किया जाता था।

लैव्यव्यवस्था 4 और 5 में अनजाने पापों के सम्बन्ध में बलिदान के लिये व्यवस्था भी दिए गए हैं; गिनती 15 में इन व्यवस्थाओं का उद्देश्य उनके लिये पूरक थे जो पहले दिए गए थे। रिचर्ड बॉयस ने समझाया,

> गिनती 15 में ऐसा कुछ भी नहीं है जिसके बारे में पहले नहीं बताया गया हो:

सामान्य रूप से भेंट चढ़ाना (लैव्य. 1-7); तुम्हारे साथ में रहनेवाले परदेशी को पर्व मनाने में शामिल करना (गिनती 9:14); पहली उपज की भेंट लाना (लैव्य. 23:9-14); "अनजाने" और "जानबूझकर" पाप (लैव्य. 5:14-6:7); विश्राम के दिन आग जलाने का दण्ड, जिसमें लकड़ियाँ इकट्ठा करना इसकी शुरुआत करना है (निर्गमन 35:3); और मिलावट से वस्त्र न बुनना (लैव्य. 19:19)।[8]

आयतें 27-29. इसी तरह, जब कोई प्राणी **भूल से** पाप करता था और **भटक जाता** था, तो वह **एक वर्ष की एक बकरी पापबलि करके चढ़ाता** था। और **याजक उसके लिये प्रायश्चित्त** करता था और उसे क्षमा किया जाता था। **देशी** के समान **परदेशी** के लिये भी एक ही व्यवस्था होती थी।

"भूल से" किए गए पाप के सम्बन्ध में ये व्यवस्था कई महत्वपूर्ण सिद्धान्तों को प्रदर्शित करते हैं:

- परमेश्वर चाहता था कि उसके लोग उसके सभी नियमों का पालन करें।
- परमेश्वर के किसी भी नियम का उल्लंघन करना पाप था।
- यदि उल्लंघन "अनजाने," या "भूल से," या "बिना जाने," या "अज्ञानता में" किया गया था, तो अपराधी को क्षमा किया जा सकता था।
- क्षमा निर्धारित बलिदान चढ़ाने पर निर्भर करता था ताकि याजक प्रायश्चित कर सके।
- इस्राएलियों के लिये लागू होने वाले नियम उन परदेशियों पर भी लागू होते थे जो उनके बीच रहते थे।

ढिठाई के पाप के लिये कोई चढ़ावा नहीं (15:30, 31)

30"परन्तु क्या देशी क्या परदेशी, जो प्राणी ढिठाई से कुछ करे, वह यहोवा का अनादर करनेवाला ठहरेगा, और वह प्राणी अपने लोगों में से नष्ट किया जाए। 31वह जो यहोवा का वचन तुच्छ जानता है, और उसकी आज्ञा का टालनेवाला है, इसलिये वह प्राणी निश्चय नष्ट किया जाए; उसका अधर्म उसी के सिर पड़ेगा।"

आयतें 30, 31. जब ध्यान "भूल से" किए गए पाप से "ढिठाई से" किए गए पाप में स्थानांतरित हो जाता है: "**जो प्राणी ढिठाई से कुछ करे, वह यहोवा का अनादर करनेवाला ठहरेगा, और वह प्राणी अपने लोगों में से नष्ट किया जाए।**" इन आयतों के सम्बन्ध में कई प्रश्न उठते हैं:

"ढिठाई" का पाप किस प्रकार का पाप था? इब्रानी सचमुच उस व्यक्ति की बात करता है जो "एक बड़ा भयानक" पाप करता है। विभिन्न संस्करण इस अभिव्यक्ति का अनुवाद "ढिठाई से," "धृष्टता से," "जानबूझकर," या "उद्देश्य से" के रूप में करते हैं। स्पष्ट है, इस मामले में पापी जानता था कि कुछ गलत था; परन्तु वह जानबूझ कर - जैसा कि कानूनी शब्द "दुर्भावनापूर्ण विचार के साथ" वर्णित किया जा सकता है - किया गया। शायद, यहाँ तात्पर्य कोई विशिष्ट पाप से नहीं

था। उदाहरण के लिये, परमेश्वर सिर्फ अनादर के पाप का वर्णन नहीं कर रहा था। (जानबूझकर किया कोई भी पाप अनादर है!) बल्कि, यह वाक्यांश किसी भी पाप पर लागू होता है जो जानबूझकर किया जाता है।

जानबूझकर किए पाप के परिणाम कितने गंभीर होते थे? पाप करनेवाले को "अपने लोगों में से नष्ट किया जाता था।" इस दण्ड को कभी-कभी निर्वासन या बहिष्कार के रूप में माना जाता है। अन्य अनुवाद कहता है, "परन्तु यदि तुम में से कोई उद्देश्य पूर्ण गलत करता है, तो … तुमने मेरे नियमों का उल्लंघन करके मेरे विरुद्ध पाप किया है। तुम्हें दूर किया जाएगा और अब तू इस्राएली लोगों के बीच नहीं रहने पाएगा।" परन्तु, ऐसा उदाहरण यह इंगित करता है कि "नष्ट किया जाना" का अर्थ मार डाला जाना होता था।

क्या ऐसे बलिदानों के लिये कोई बलिदान चढ़ाया जा सकता है? शायद इस अनुच्छेद का सबसे महत्वपूर्ण पहलू यह नहीं कहता है: बलिदान पर एक अध्याय में, उसका लेख "ढिठाई के" पापों के लिये बलिदान प्रदान नहीं करता है। ऐसे पापों के लिये कोई बलिदान नहीं दिया जाता था; कोई कह सकता है, ऐसे पाप अक्षम्य थे। जानबूझकर पाप करनेवाले का **अधर्म उसी के** सिर पर रहेगा। ऐसे पापों के लिये दण्ड मृत्यु ही था। इब्रानियों के लेखक ने इस सिद्धान्त को मसीहियों के लिये लागू किया और कहा, "यदि हम जानबूझकर पाप करते रहें, तो पापों के लिये फिर कोई बलिदान बाकी नहीं। हाँ, दण्ड का एक भयानक बाट जोहना … कर देगा" (इब्रा. 10:26, 27)।

जानबूझकर पाप ऐसे कठोर दण्ड क्यों लाते थे? जो लोग "ढिठाई के" पाप करते थे, वे "यहोवा का अनादर" करनेवाले दोषी ठहरते थे; जो **यहोवा का वचन तुच्छ** जानते थे, और उद्देश्यपूर्ण **उसकी आज्ञा के टालनेवाले** होते थे। कोई आश्चर्य नहीं कि परमेश्वर ने ऐसे पापों को क्षमा करने से इनकार कर दिया और व्यवस्था के न माननेवाले को मृत्युदण्ड की आज्ञा दी!

"ढिठाई" और "अनजाने" पाप के बारे में कोई आश्चर्य कर सकता है कि उस पाप पर व्यवस्था कैसे लागू हुआ जो इस्राएल ने अभी-अभी किया था। तर्क यह दिया जा सकता है कि इस्राएल, जिसने एक अनादर के पाप का अधर्म किया, "नष्ट" नहीं किया गया था, अर्थात् उस जाति का अन्त नहीं हुआ था। इस तथ्य के लिये एक सम्भावित स्पष्टीकरण यह है कि परमेश्वर को अपने नियमों को तोड़ने का अधिकार है। इस मामले में, उसकी दया के कारण और अब्राहम को किए उसकी वाचा के कारण, उसने इस व्यवस्था के माँग के अनुसार दण्ड को नहीं रखा था। एक और स्पष्टीकरण यह है कि परमेश्वर ने वास्तव में अपने नियमों का पालन किया: इस्राएल के जानबूझकर और भयानक पाप के बाद उसने अधर्मी पीढ़ी को जंगल में मर जाने का दण्ड दिया, और उसने उन्हें उनके पाप के लिये प्रायश्चित करने का कोई अवसर नहीं दिया। इसलिये, कनान को अपने आप जीतने का उनका प्रयास असफल रहा।

सब्त के नियम का उल्लंघन करनेवाले पर पथराव (15:32-36)

[32]जब इस्राएली जंगल में रहते थे, उन दिनों एक मनुष्य विश्राम के दिन लकड़ी बीनता हुआ मिला। [33]और जिनको वह लकड़ी बीनता हुआ मिला, वे उसको मूसा और हारून, और सारी मण्डली के पास ले गए। [34]उन्होंने उसको हवालात में रखा, क्योंकि ऐसे मनुष्य से क्या करना चाहिये वह प्रकट नहीं किया गया था। [35]तब यहोवा ने मूसा से कहा, "वह मनुष्य निश्चय मार डाला जाए; सारी मण्डली के लोग छावनी के बाहर उस पर पथराव करें।" [36]इस प्रकार जैसा यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी उसी के अनुसार सारी मण्डली के लोगों ने उसको छावनी से बाहर ले जाकर उस पर पथराव किया, और वह मर गया।

आयतें 32-34. जानबूझकर पाप के बारे में व्यवस्था का चित्रण उस समय की कहानी से किया गया है **जब इस्राएली जंगल में रहते थे**। उस समय में, **एक मनुष्य** जो **विश्राम के दिन लकड़ी बीनता हुआ** पाया गया था, जो सब्त का सीधा सीधा उल्लंघन करना था। उस मनुष्य **को मूसा और हारून और सारी मण्डली के पास** लाया गया था **जिनको वह लकड़ी बीनता हुआ** अर्थात् सब्त के नियम का उल्लंघन करता हुआ मिला था। उसे **हवालात में रखा गया** जब तक यह तय नहीं किया गया कि **ऐसे मनुष्य से क्या करना चाहिए।**

आयतें 35, 36. तब यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी कि अपराधी को सारी मण्डली के लोगों द्वारा मार डाला जाना चाहिए। उसने कहा, **"वह मनुष्य निश्चय मार डाला जाए; सारी मण्डली के लोग छावनी के बाहर उस पर पथराव करें।"** जिसके परिणामस्वरूप, उसे छावनी से बाहर ले जाया गया, जहाँ **सारी मण्डली** इकट्ठी हुई और **उस पर** पथराव किया गया, और **वह मर गया**, **इस प्रकार जैसा यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी**।[9]

क्योंकि व्यवस्था ने सब्त के नियम का उल्लंघन करने पर मृत्यु की दण्ड पहले ही निर्धारित की थी (निर्गमन 31:12-17; 35:1-3), लोगों को निश्चित क्यों नहीं था कि उस मनुष्य से क्या करना चाहिए जिस पर सब्त के नियम का उल्लंघन करने का दोष था? परमेश्वर ने सातवें दिन काम करते हुए सब्त के नियम का उल्लंघन करने पर मृत्युदण्ड की आज्ञा दी थी, परन्तु क्या "काम" करने को कहा गया था? व्यवस्था ने कहा कि विश्राम के दिन आग जलाना मना था, परन्तु यह नहीं कहा गया कि लकड़ी बीनने की अनुमति नहीं थी क्योंकि यह "काम" था। इस्राएल को उस बिंदु पर स्पष्टीकरण की आवश्यकता थी, और परमेश्वर ने इसे दिया। उस समय से, इस्राएल न केवल यह जानता था कि सब्त के नियम का उल्लंघन करना एक पाप था जिसके लिये पथराव किया जाता था, बल्कि यह भी कि "लकड़ी बीनना" भी काम था और इसलिये सब्त के नियम का उल्लंघन करना था। इसके अलावा, वे समझ गए कि जान बूझकर ऐसा करना एक ढिठाई का पाप था जिसके लिये कोई बलिदान उपलब्ध नहीं था। वाल्टर रिगन्स ने व्यवस्था के अधीन भयानक अपराधों को सूचीबद्ध किया:

पुराने नियम के अनुसार ग्यारह अपराधों को पथराव से दण्डित किया जाता था: मूर्तिपूजा (व्यव. 17:2-7); मूर्तिपूजा का प्रोत्साहन (व्यव. 13:6-10); सन्तान का बलिदान (लैव्य. 20:2-5); पराए देवता के नाम पर भविष्यद्वाणी (व्यव. 13:1-5); ओझाई अथवा भूत की साधना (लैव्य. 20:27); यहोवा के नाम की निन्दा करनेवाला (लैव्य. 24:15-16); सब्त के नियम का उल्लंघन करना (यहाँ दिया गया); किसी बैल द्वारा हत्या (निर्गमन 21:28-29); व्यभिचार (व्यव. 22:22ff.); हठीले पुत्र द्वारा विद्रोह (व्यव. 21:18ff.); यहोवा को अर्पण की वस्तुओं में से कुछ ले लेना (यहोशू 7:25)।[10]

स्मरण करानेवाली झालर (15:37-41)

[37]फिर यहोवा ने मूसा से कहा, [38]"इस्राएलियों से कह कि अपनी पीढ़ी पीढ़ी में अपने वस्त्रों के छोर पर झालर लगाया करना, और एक एक छोर की झालर पर एक नीला फीता लगाया करना; [39]और वह तुम्हारे लिये ऐसी झालर ठहरे, जिस से जब जब तुम उसे देखो तब तब यहोवा की सारी आज्ञाएँ तुम को स्मरण आ जाएँ; और तुम उनका पालन करो, और तुम अपने अपने मन और अपनी अपनी दृष्टि के वश में होकर व्यभिचार न करते फिरो जैसे करते आए हो। [40]परन्तु तुम यहोवा की सब आज्ञाओं को स्मरण करके उनका पालन करो, और अपने परमेश्वर के लिये पवित्र बनो। [41]मैं यहोवा तुम्हारा परमेश्वर हूँ, जो तुम्हें मिस्र देश से निकाल ले आया कि तुम्हारा परमेश्वर ठहरूँ; मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।"

आयतें 37, 38. अध्याय में अन्तिम आज्ञा यह है कि इस्राएलियों को **अपनी पीढ़ी पीढ़ी में अपने वस्त्रों के छोर पर झालर** लगाने की आवश्यकता थी (व्यव. 22:12)। **एक एक छोर की झालर पर एक नीला फीता** लगाना था। नीला तम्बू के विभिन्न हिस्सों में (निर्गमन 26:1, 4, 31, 36; 27:16) और महायाजक के वस्त्रों में (निर्गमन 28:5, 6, 8, 15, 28, 31, 33, 37) उपयोग किए जाने वाले तीन विशेष रंगों में से एक था। इस रंग के बारे कोई वर्णन नहीं दिया गया है। टिमोथी आर. एशली ने विचार रखा कि "यह राजसी गौरव का प्रतीक था। इस्राएल का राजा यहोवा था। इसलिये नीला रंग लगाने को कहा गया जो विशेष रूप से उसका था।"[11]

आयतें 39-41. लोग उस **झालर को देखते** और **यहोवा की सारी आज्ञाएँ** उनको **स्मरण आ** जाती थीं **उनका पालन करो**, न कि **अपने अपने मन और … करते आए हो**। उनकी अभिलाषाओं के कारण, वे अतीत में **व्यभिचार करते फिरते** थे। भविष्य में, उन्हें परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करना स्मरण रखना था ताकि वे उसके लिये पवित्र हों। यहोवा ने इस्राएल को आज्ञा मानने का एक आसान कारण यह कहते हुए दिया, **"मैं यहोवा तुम्हारा परमेश्वर हूँ, जो तुम्हें मिस्र देश से निकाल ले आया कि तुम्हारा परमेश्वर ठहरूँ; मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।"** इस्राएल को उसके स्वभाव के कारण, उसने इस्राएल के लिये जो किया था, और इस्राएल के

साथ उसके रिश्ते के कारण परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करना स्मरण रखना था।

अनुप्रयोग

परमेश्वर को चढ़ाई जाने वाली बलियाँ (अध्याय 15)

अध्याय 15 में कई प्रकार की बलियों पर चर्चा की गई है: होमबलियाँ; दो प्रकार के मेलबलियाँ: स्वेच्छाबलियाँ और मन्नतबलियाँ (एक मन्नत को पूरा करने के लिए बलि); होमबलियों के साथ जुड़ी हुई अन्न बलियाँ और अर्घबलियाँ; पहले गूंथे हुए आटे या उठाई हुई भेंटे; और पापबलियाँ।

यदि हमें लगता है कि इस अनुच्छेद का हमारे साथ कुछ लेना देना नहीं है, तो हम भूल में हैं। नया नियम उस बलिदान के बारे में बताता है जिसे मसीह ने हमारे पापों को दूर करने के लिए दिया था (इब्रा. 9:26)। वह बलिदान हमारे लिए दिया गया था। नया नियम भी उन बलिदानों का उल्लेख करता है जो हमारे द्वारा मसीहियों के रूप में चढ़ाए जाते हैं (रोम. 12:1; इब्रा. 13:15)। हम दोनों प्रकार के बलिदान से सम्बन्धित 15 नियमों को गिनती में पाते हैं - अर्थात, पापों के लिए बलिदान और उसके लोगों द्वारा परमेश्वर को चढ़ाए गए बलिदान।

बलियाँ उस समय। परमेश्वर की उसके लोग इस्राएल से क्या आशा थी? आइए हम इस अध्याय में वर्णित विभिन्न प्रकार की बलियों की श्रेणियों पर निकटता से दृष्टि डालें।

1. ग्रहणयोग्य बलियाँ (15:1-21)। ग्रहणयोग्य बलियों का वर्णन आयत 1 से 21 में किया गया है। इन्हें इस्राएलियों के प्रतिज्ञा के देश (15:1, 2) में प्रवेश करने के बाद चढ़ाया जाना था। आयत 3: होमबलियाँ, मेलबलियाँ (स्वेच्छाबलियाँ और वे बलियाँ जो मन्नत पूरी करने के लिए थीं), और अन्य बलियों को "नियत समयों" पर चढ़ाया जाता था (सम्भवतः व्यवस्था के अनुसार विभिन्न पर्वों पर)। अध्याय के इस भाग में नामित बलियाँ पापों के लिए क्षमा मांगने के लिए थीं। अध्याय के अगले भाग में उन पर चर्चा की गई है।

इन बलियों से सम्बन्धित नियमों में, परमेश्वर ने लोगों को दाखमधु का अर्घ चढ़ाने (15:5, 7, 10) और अन्न या अनाज के तेल मिले हुए आटे (15:4, 6, 9) को प्रत्येक पशु के बलिदान समेत चढ़ाने के निर्देश दिए (15:4-13)। जितना बड़ा पशु बलि किया जाता था, उतना ही अधिक दाखमधु, आटा, और तेल को उसके साथ चढ़ाना पड़ता था (15:4-10)। इसके साथ ही, परमेश्वर ने लोगों को बताया कि, जब वे कनान में प्रवेश कर लें, तो उन्हें भूमि की पहली उपज के भोजन की भेंट चढ़ानी थीं (15:18-21)।

यद्यपि व्यवस्था के अधीन बलिदान की प्रणाली के अनुसार इस्राएल के लिए आवश्यक था कि वह पाप करने पर परमेश्वर को बलिदान चढ़ाए, फिर भी लोग बहुत से अवसरों पर बलिदान चढ़ाया करते थे। जब वे मन्नतें मांगते, जब वे धन्यवादी होते, या जब वे विभिन्न पर्वों को मनाते थे, या अन्य समयों पर। इनमें

से अधिकांश बलिदान स्वेच्छा से किए जाते थे; इस्राएलियों ने परमेश्वर को बलिदान दिए क्योंकि वे अपने प्रसन्न हृदयों से ऐसा करना चाहते थे। हालाँकि, इन बलिदानों को परमेश्वर के सामने ग्रहणयोग्य होने के लिए, इन्हें परमेश्वर के निर्देशों के अनुसार चढ़ाया जाना आवश्यक था।

2. आवश्यक बलियाँ (15:22-29)। अन्य बलियाँ आवश्यक थीं, इस भाव में कि वे पाप क्षमा के लिए आवश्यक थीं। इन्हें "पापबलियाँ" कहा जाता था (15:24, 25, 27)। आयतें 22 से 29 तक एक भिन्न प्रकार के पाप पर बात करती हैं: "अज्ञानता" या "अनजाने" में किया गया पाप। हम इस प्रकार के वाक्यांशों को देखते हैं: "फिर जब तुम इन सब आज्ञाओं में से जिन्हें यहोवा ने मूसा को दिया है किसी का उल्लंघन भूल से करो" (15:22); "उसमें यदि भूल से किया हुआ पाप मण्डली के बिना जाने हुआ हो" (15:24); "फिर यदि कोई प्राणी भूल से पाप करे" (15:27); "भूल से पाप करने वाले प्राणी" (15:28); "जो कोई भूल से कुछ करे, चाहे वह इस्राएलियों में देशी हो, चाहे तुम्हारे बीच परदेशी होकर रहता हो, सब के लिए तुम्हारी एक ही व्यवस्था हो" (15:29)।

"अज्ञानता" या "अनजाने" में पाप करने का क्या तात्पर्य है? ऐसा पाप व्यक्ति से अनजाने में हुआ था, या पाप न करने की मंशा के साथ हुआ था। यह अनजाने में या बिना सोचे समझे हुआ था। यह एक अनियोजित पाप था, अज्ञानता में या उस क्षण के आवेश के दौरान हुआ था। इस तरह का पाप "ढिठाई" (15:30) से पाप करने के विपरीत है - जो यह जानकर कि क्या सही है और जानबूझकर गलत काम करना है।

जब लोग अनजाने में पाप करते थे तो इस्राएल में कौन से मापदण्ड अपनाए जाते थे? परमेश्वर ने व्यक्ति और मण्डली दोनों के लिए निर्देश दिए:

> फिर जब तुम इन सब आज्ञाओं में से जिन्हें यहोवा ने मूसा को दिया है किसी का उल्लंघन भूल से करो, अर्थात् जिस दिन से यहोवा आज्ञा देने लगा, और आगे की तुम्हारी पीढ़ी-पीढ़ी में उस दिन से उसने जितनी आज्ञाएँ मूसा के द्वारा दी हैं, उसमें यदि भूल से किया हुआ पाप मण्डली के बिना जाने हुआ हो, तो सारी मण्डली यहोवा को सुखदायक सुगन्ध देने वाला होमबलि करके एक बछड़ा, और उसके संग नियम के अनुसार उसका अन्नबलि और अर्घ चढ़ाए, और पापबलि करके एक बकरा चढ़ाए (15:22-24)।

परमेश्वर की अपेक्षा थी कि याजक लोगों के लिए प्रायश्चित करे। इसके बाद उन्हें क्षमा किया जाएगा क्योंकि "यह एक भूल थी" (पाप अनजाने में हुआ था) और इसलिए क्योंकि लोग आवश्यक बलि को लेकर आए थे (15:25, 26)।

यदि एक व्यक्ति - चाहे वह इस्राएली हो या कोई परदेशी - उसने अनजाने में पाप किया था, उसे "एक वर्ष की बकरी को पाप बलि के रूप में चढ़ाना था।" इसके बाद याजक उसके लिए पश्चाताप करे और उसका पाप क्षमा किया जाएगा (15:27-29)।

3. व्यर्थ बलियाँ (15:30-41)। गिनती का यह भाग उन पापों का परिचय

देता है जिनके लिए कोई भेंट नहीं थीं, और कोई भी बलि प्रभावी नहीं हो सकती थी। वे पाप क्या थे? परमेश्वर ने कहा,

> परन्तु क्या देशी क्या परदेशी, जो प्राणी ढिठाई से कुछ करे, वह यहोवा का अनादर करने वाला ठहरेगा, और वह प्राणी अपने लोगों में से नष्ट किया जाए। वह जो यहोवा का वचन तुच्छ जानता है, और उसकी आज्ञा का टालने वाला है, इसलिये वह प्राणी निश्चय नष्ट किया जाए; उसका अधर्म उसी के सिर पड़ेगा (15:30, 31)।

आयत 30 में "ढिठाई" से पाप करने वाले व्यक्ति को "अनजाने" में पाप करने वाले व्यक्ति के विपरीत बताया गया है, जैसा कि पिछली आयतों में चर्चा की गई है। इस वाक्यांश का शाब्दिक अर्थ "मनमानी" है (देखें RSV; NRSV)। यहाँ पर एक नियम है: पुराने नियम की बलिदान प्रणाली की मंशा अनजाने में किए गए पापों के लिए क्षमा प्रदान करना था, जानबूझकर, ढिठाई से किए गए पापों के लिए नहीं। यह नियम दिखाता है कि ढिठाई का पाप कितना भयानक है: जिस व्यक्ति ने ढिठाई से पाप किया था वह "यहोवा का अनादर कर रहा था"; उसने "यहोवा के वचन को तुच्छ जाना था" और "उसकी आज्ञा को टाला था।"

एक "मनमानी," और ढिठाई का पाप क्या है? एक ऐसे व्यक्ति के लिए "पूरी तरह से नष्ट" किए जाने का क्या तात्पर्य था जिसने ढिठाई से पाप किया था? इन प्रश्नों के उत्तर देने के, प्रेरित लेखक ने व्यवस्था के इस कथन का अनुसरण इसे तोड़ने के उदाहरण के साथ किया।

इसका उदाहरण 15:32-36 में दिया गया है। जब इस्राएली जंगल में रहते थे, उन दिनों एक मनुष्य विश्राम के दिन लकड़ी बीनता हुआ मिला। और जिनको वह लकड़ी बीनता हुआ मिला, वे उसको मूसा और हारून, और सारी मण्डली के पास ले गए। उन्होंने उसको हवालात में रखा, क्योंकि ऐसे मनुष्य से क्या करना चाहिये वह प्रकट नहीं किया गया था। तब यहोवा ने मूसा से कहा, "वह मनुष्य निश्चय मार डाला जाए; सारी मण्डली के लोग छावनी के बाहर उस पर पथराव करें।" इस प्रकार जैसा यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी उसी के अनुसार सारी मण्डली के लोगों ने उसको छावनी से बाहर ले जाकर उस पर पथराव किया, और वह मर गया।

इस मनुष्य का पाप "ढिठाई" का पाप था। उसे सभी इस्राएलियों के समान, पता था कि किसी को सब्त के दिन काम नहीं करना था। उसने ढिठाई से वह काम किया, जिसके विषय में उसे पता था कि यह उसे नहीं करना चाहिए। इसी कारण, उसे पथराव करने के द्वारा "पूरी रीति से नष्ट" कर दिया गया।

जानबूझकर किए गए पाप के भयानक परिणामों के प्रकाश में, इस्राएली स्वयं को इस प्रकार के पाप करने से रोकने के लिए क्या कर सकते थे? परमेश्वर ने इस समस्या का एक समाधान दिया। उसने इस्राएलियों को निर्देश दिया कि वे अपने वस्त्रों पर नील फीतों वाली झालर लगाया करें, ताकि उन झालरों को देखकर उन्हें उसकी आज्ञाएँ स्मरण आएं (15:39, 40)। स्मरण आने के बाद उन्हें व्यवस्था का

पालन करना था।

ढिठाई, बलवे, और मनमानी के पाप का एकमात्र समाधान इसे न करना था। स्मरण कराने वाली झालर की मंशा लोगों को व्यवस्था का स्मरण करवाना था, ताकि वे उसका पालन करें और पाप से परे रहें।

बलियाँ आज। हमें भी परमेश्वर को बलियाँ चढ़ानी हैं (1 पतरस 2:5)। अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ (रोम. 12:1)। जब हम परमेश्वर के लिए गाते हैं, तो हम उसे स्तुति के बलिदान चढ़ाते हैं (देखें इब्रा. 13:15)। जब हम भलाई करते हैं और दूसरों के साथ बांटते हैं, तो हम परमेश्वर को बलिदान चढ़ाते हैं (इब्रा. 13:16)। जो हम सुसमाचार का प्रचार करने में सहायता करने के लिए देते हैं वह "सुखदायक सुगन्ध, ग्रहण करने योग्य बलिदान के समान, जो परमेश्वर को भाता है" के रूप में समझा जाता है। (फिलि. 4:18)। इस प्रकार के बलिदान चढ़ाने के सम्बन्ध में, हम पुराने नियम के उदाहरणों और निर्देशों से कम से कम दो सत्य सीख सकते हैं।

पहला, हमें परमेश्वर को स्वेच्छा से और उदारतापूर्वक देना चाहिए। यदि इस्राएल ने, एक छोटी व्यवस्था के अधीन होकर भी, परमेश्वर को बहुतायत से बलिदान चढ़ाने की भावना को अनुभव किया, क्या हमें, जो कि एक उत्तम व्यवस्था के अधीन है, उन बलिदानों को चढ़ाने के लिए और अधिक उदार नहीं होना चाहिए जो हम उसे देते हैं? इस्राएल ने वे बलिदान इसलिए नहीं चढ़ाए क्योंकि उन्हें चढ़ाने थे; उन्होंने उन्हें इसलिए दिया क्योंकि वे ऐसा करना चाहते थे!

दूसरा, जब हम परमेश्वर के निर्देशों का पालन करते हैं तो जो हम उसको देते हैं वह उससे प्रसन्न होता है। अध्याय 15 में बलिदानों को बार-बार "परमेश्वर के लिए सुखदायक सुगन्ध" कहा गया है (15:3, 7, 10, 13, 14, 24; देखें उत्पत्ति 8:20, 21)। परमेश्वर ने अपने लोगों के बलिदानों की सराहना की और उनका आनन्द लिया। यदि वह उनसे प्रसन्न था, तो हम इस बात से सुनिश्चित हो सकते हैं कि हम आज जो कुछ भी उसे चढ़ाते हैं वह उससे प्रसन्न है। उदाहरण के लिए, जब हम परमेश्वर की आराधना में स्तुति के गीत चढ़ाते हैं, तो हमारा कर्तव्य है कि हम इसे स्वेच्छा, प्रसन्नता, और आनन्दपूर्वक करें। हमें संगीत के विषय में भी परमेश्वर के निर्देशों का पालन करना चाहिए: हमें गाना चाहिए - और यही सब कुछ है। हमें वाद्ययंत्रों का उपयोग नहीं करना चाहिए क्योंकि यह हमें दिए गए उसके निर्देशों के परे चला जाएगा (इफि. 5:19; कुलु. 3:16)।

मसीहियों को किस प्रकार "पाप बलियों के सम्बन्ध" में निर्देशों को लागू करना चाहिए? हमें एक बात जो *नहीं* करनी चाहिए वह यह है कि हमारी आज की भेंटों की तुलना पुराने नियम की पापबलियों से करना। अपने आप का बलिदान, स्तुति के हमारे गीतों, दूसरों को जो सहायता हम देते हैं, और परमेश्वर के उद्देश्य के लिए हमारी भेंटें पापबलियाँ नहीं हैं। वे पाप दूर नहीं कर सकती। पुराने नियम के पापों की तुलना में एकमात्र वस्तु क्रूस पर यीशु मसीह का बलिदान है। वह हमारी महान पापबलि है! वह एकदम उपयुक्त बलिदान है, पुराने नियम में बैल और बकरियों के बलिदान से कहीं श्रेष्ठ है (इब्रा. 9; 10)।

परमेश्वर की कलीसिया के सदस्य के रूप में, हम अपने पापों को दूर करने के लिए कुछ भी नहीं देते हैं। इसके बजाय, हम यीशु और उसके शुद्ध करने वाले लहू की ओर हमारे पापों के क्षमा के लिए फिरते हैं। जब हम पहली बार विश्वास करने और बपतिस्मा लेने के द्वारा मसीही बने (मरकुस 16:16), यीशु के लहू ने हमारे पापों को धो दिया (प्रेरितों 22:16; इफि. 1:7; प्रका. 1:5)। अब, जब हम "ज्योति में चलते हैं," यीशु का लहू हमें हमारे पापों से शुद्ध करना जारी रखता है (1 यूहन्ना 1:7)। हमारी ज़िम्मेदारी यीशु के बलिदान को स्वीकार करना है ताकि क्षमा किए जाने के द्वारा, हम उसकी कृपा के लिए उसकी स्तुति के बलिदान चढ़ा सकते हैं!

नया नियम इब्रानियों 10:26-31 में जानबूझकर किए गए पाप से सम्बन्धित नियमों का सन्दर्भ देता है:

> क्योंकि सच्चाई की पहचान प्राप्त करने के बाद यदि हम जान बूझकर पाप करते रहें, तो पापों के लिये फिर कोई बलिदान बाकी नहीं। हाँ, दण्ड का एक भयानक बाट जोहना और आग का ज्वलन बाकी है जो विरोधियों को भस्म कर देगा। जब मूसा की व्यवस्था का न मानने वाला, दो या तीन जनों की गवाही पर, बिना दया के मार डाला जाता है, तो सोच लो कि वह कितने और भी भारी दण्ड के योग्य ठहरेगा, जिसने परमेश्वर के पुत्र को पाँवों से रौंदा और वाचा के लहू को, जिसके द्वारा वह पवित्र ठहराया गया था, अपवित्र जाना है, और अनुग्रह के आत्मा का अपमान किया। क्योंकि हम उसे जानते हैं, जिसने कहा, "पलटा लेना मेरा काम है, मैं ही बदला दूँगा।" और फिर यह, कि "प्रभु अपने लोगों का न्याय करेगा।" जीवते परमेश्वर के हाथों में पड़ना भयानक बात है।

इब्रानियों का लेखक पुराने नियम को जानता था; उसने कहा कि जानबूझकर पाप करने वाले पापियों के "पापों के लिए कोई बलिदान बाकी नहीं है।" उन्होंने उस सत्य को मसीही युग पर लागू किया। यहाँ प्रस्तुत सिद्धान्त यह है कि यीशु के बलिदान से उन मसीहियों को लाभ नहीं होगा जो जानबूझकर पाप करना जारी रखेंगे। पुराने समय के इस्राएली लोगों की समान, जो मसीही जानबूझकर और उद्देश्यपूर्वक पाप करते हैं, वे उन पापों के क्षमा होने की आशा नहीं कर सकते।

उपसंहार। हम सभी के लिए एक बलिदान चढ़ाया गया था: यीशु, उसकी क्रूस पर मृत्यु में। वह बलिदान आवश्यक है; हमारा मसीह के बहाए गए लहू द्वारा प्रदान किए गए लाभों को छोड़कर उद्धार नहीं जा सकता है। इसके अलावा, हम पाप के दोषी हो सकते हैं जिसके लिए कोई बलिदान बाकी नहीं है यदि हम जानबूझकर मसीह से दूर हो जाते हैं और उससे दूर रहते हैं। ये सत्य 15 अध्याय में परिलक्षित होते हैं।

जीवन जीने के दो तरीके (15:39)

हमें किस प्रकार जीवन जीना है? हमें किस प्रकार "अपने कदमों को निर्देशित" करना है? यह निर्णय करने में क्या हमारी सहायता कर सकता है कि क्या करें और अपने जीवनों को किस प्रकार निर्देशित करें? गिनती 15:39 इस प्रश्न के लिए दो

वैकल्पिक उत्तर प्रस्तुत करता है: "और वह तुम्हारे लिये ऐसी झालर ठहरे, जिस से जब-जब तुम उसे देखो तब-तब यहोवा की सारी आज्ञाएँ तुम को स्मरण आ जाएँ; और तुम उनका पालन करो, और तुम अपने-अपने मन और अपनी-अपनी दृष्टि के वश में होकर व्यभिचार न करते फिरो जैसे करते आए हो।"

इस आयत के अनुसार, हम या तो परमेश्वर की आज्ञाओं को स्मरण कर सकते हैं और उन्हें कर सकते हैं, या अपने हृदय का अनुसरण कर सकते हैं - दूसरे शब्दों में, हमारी इच्छाओं को पूरा करना और जो भी हम चाहते हैं उसे करना। हमें इनमें से क्या करना चाहिए? हमारी अपनी इच्छाओं का पालन करने के बाद हमें कहाँ ले जाएगा? हमें इस्राएलियों का उदाहरण दिया गया है, जो जंगल में मर गए (देखें नीति. 14:12)। अपने-अपने हृदय का अनुसरण करने के बजाय, आइए हम परमेश्वर की आज्ञाएँ स्मरण रखें और उन्हें करें!

गिनती 15 सन्दर्भ में

अध्याय 15 किस प्रकार उस कहानी से सम्बन्धित हैं जिसे हम गिनती में पढ़ रहे हैं? इस प्रश्न का सबसे अच्छा उत्तर यह है कि, इन नियमों को, इस्राएलियों को इस आश्वासन के साथ दिया गया था कि वे अपने पाप के बावजूद कनान में प्रवेश करें, जैसा कि परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की थी। इसलिए, अध्याय इन शब्दों के साथ आरम्भ होता है "जब तुम अपने निवास के देश में पहुँचो" (15:2)। अध्याय 15 में दिए गए आदेशों से पता चलता है कि, हालाँकि लोग विश्वासहीन थे, फिर भी परमेश्वर सदैव अपनी प्रतिज्ञा के प्रति विश्वासयोग्य बना रहा (देखें 2 तीमु. 2:13)।

हमारे पास भी इसी के समान एक आश्वासन है। हालाँकि, बहुत से लोग खो जाएँगे (मत्ती 7:13, 14), और यहाँ तक कि कुछ मसीही लोग गिर जाएँगे और अनन्तकाल के लिए खो जाएंगे (इब्रा. 10:26-31), स्वर्ग का फिर भी अस्तित्व है- और जो विश्वासयोग्य है वे उसमें प्रवेश करेंगे (प्रका. 2:10)। एक व्यक्ति के लिए यह एक आनन्द का समाचार है! आपके चारों ओर का प्रत्येक जन खो सकता है (हालाँकि हम आशा करते हैं कि ऐसा नहीं होगा), आपको फिर भी बचाया जा सकता है! आपको तब बचाया जा सकता है जब आप उद्धार के लिए प्रभु की ओर फिरेंगे और उसके प्रति विश्वासयोग्य बने रहेंगे।

गिनती 15 के लिए नए नियम के सन्दर्भ

नए नियम के कई अनुच्छेद गिनती 15 के विषय में बताते हैं। यीशु ने अपने समकालीन लोगों को दशमांश के नियमों (मत्ती 23:23) के सावधानीपूर्वक पालन का उल्लेख किया, और पौलुस ने आटे के पहले फल (रोम. 11:16) की भेंट चढ़ाने के अभ्यास पर टिप्पणी की। "यहोवा के लिए सुखदायक सुगन्ध" जो पुराने नियम के बलिदानों ने प्रदान की उन्होंने "उद्धारकर्ता की भेंट की 'सुगन्ध' की ओर संकेत किया (देखें इफि. 5:2)।"[12]

इसके अलावा, शास्त्रियों और फरीसियों के वस्त्रों पर झालरों की लम्बाई के

विषय में मत्ती 23:5 में बात की गई है। यीशु के वस्त्र का वह भाग जो बीमार स्त्री ने छुआ था ("छोर"; मत्ती 9:20; 14:36) वह सम्भवतः झालर रहा होगा।

इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने याजकों द्वारा चलाई जानेवाली बलिदान की प्रणाली की तुलना मसीह के उच्च महायाजक पद (इब्रा. 9-13) के साथ की थी। इस विस्तृत चर्चा में अध्याय 15 से कई सत्यों को सम्मिलित किया गया है, जिसमें यह निर्णय भी सम्मिलित है कि जानबूझकर किए गए पाप के लिए कोई बलिदान बाकी नहीं है (इब्रा. 10:26-31)।

मसीही के बलिदान (अध्याय 15)

नया नियम यह स्पष्ट करता है कि मसीहियों को उनके समान होमबलियाँ नहीं चढ़ानी हैं जैसे कि इस्राएली लोगों को नियमित रूप से करना पड़ता था। मसीह, हमारे सिद्ध बलिदान ने हमारे पापों को दूर करने के लिए एक बार सभी के लिए बलिदान को दे दिया (इब्रा. 7:27; 10:12)। तो, जब हम मसीहियों के द्वारा "बलिदान" पर चर्चा की जाती है, तो हमारा क्या तात्पर्य है? प्रेरित लेखकों ने *आत्मिक* बलिदानों के कुछ उदाहरण दिए जिन्हें हम परमेश्वर की स्तुति और दूसरों की सेवा के माध्यम से चढ़ा सकते हैं:

- पौलुस ने लिखा, "... अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ। यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है" (रोम. 12:1)।
- पौलुस की सहायता के लिए फिलिप्पियों की भेंट "सुखदायक सुगन्ध, ग्रहण करने योग्य बलिदान है, जो परमेश्वर को भाता है" (फिलि. 4:18) थीं।
- "... इसलिये हम उसके द्वारा स्तुतिरूपी बलिदान, अर्थात् उन होंठों का फल जो उसके नाम का अंगीकार करते हैं, परमेश्वर को सर्वदा चढ़ाया करें" (इब्रा. 13:15)।
- "भलाई करना और उदारता दिखाना न भूलो, क्योंकि परमेश्वर ऐसे बलिदानों से प्रसन्न होता है" (इब्रा. 13:16)।
- "तुम भी आप जीवते पत्थरों के समान आत्मिक घर बनते जाते हो, जिससे याजकों का पवित्र समाज बनकर, ऐसे आत्मिक बलिदान चढ़ाओ जो यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को ग्रहणयोग्य हैं" (1 पतरस 2:5)।

समाप्ति नोट्स

[1]इस्राएल का उस देश में पहुँचने के अन्य संदर्भों के लिये, देखें लैव्य. 23:10; 25:2; गिनती 15:18. [2]तीसरे प्रकार की मेलबलि, "धन्यवाद बलि" (लैव्य. 7:15; 2 इतिहास 29:31), जिसका उल्लेख इन आयतों में नहीं किया गया है। सम्भवतः, इन नियमों में इनका भी वर्णन किया गया था। [3]जेकब मिलग्रोम, *गिनती,* द जेपीएस तोराह कमेंट्री (फिलाडेलफियाः ज्यूविश पब्लिकेशन सोसाइटी, 1990), 118. [4]विलियम जी. डेवर, "वेट्स एण्ड मेसर्स," में *हार्पर्स बाइबल डिक्शनरी,* सम्पादक

पॉल जे. एक्टिमियर (सैन फ्रांसिस्को: हार्पर & रो, 1985), 1130. [5]उपरोक्त., 1131. [6]टिमोथी आर. एशली, *द बुक ऑफ़ गिनती,* द न्यू इंटरनेशनल कमेन्ट्री ऑन द ओल्ड टेस्टमेंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1993), 282. [7]मिलग्रोम, 121. [8]रिचर्ड बॉयस, *लैव्यव्यवस्था एण्ड गिनती,* वेस्टमिंस्टर बाइबल कम्पैनियन (लुइसविले: वेस्टमिंस्टर जॉन नॉक्स प्रेस, 2008), 169. [9]इसका समान उदाहरण यहोवा का अपमान करनेवाले के अन्त का वर्णन लैव्यव्यवस्था 24:10-23 में पाया जाता है। [10]वाल्टर रिगन्स, *गिनती,* द डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रेस, 1983), 125.

[11]एशली, 294-95. [12]रोनॉल्ड बी. एल्लन, "गिनती," *एक्सपोजीटर्स बाइबल कमेंट्री,* वॉल्यूम 2, *उत्पत्ति-गिनती,* संपादक फ्रैंक ई. गैबलीन (ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगनः जॉडरवैन पब्लिशिंग हाऊस, 1990), 826.